शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

निराला साहित्य में बिम्ब और प्रतीक विधान

चेतना दरगड़ (शोधार्थी)
डॉ. अवधेश कुमार जौहरी (शोध निर्देशक)
संगम विश्वविद्यालय
भीलवाड़ा (राज.) भारत

भूमिका

कविता में प्रमुखता भावों की होती है, लेकिन विचार भी कविता के लिए अपाच्य नहीं हैं। यदि विचार भावनाओं के रंग में रंगकर अभिव्यक्त होते हैं, तो इससे कविता का रंग और भी निखर उठता है। कविता में भावों और विचारों के सन्तुलन को इसलिए अत्यधिक महत्व प्रदान किया गया है। साक्ष्य के रूप में अंगरेजी मनीषी विल्सन की कविता की परिभाषा देखी जा सकती है, जिसमें उन्होंने कविता को विचारों की भावमय अभिव्यक्ति स्वीकार किया है। कविता अपनी अभिव्यक्ति में चित्रकला के अत्यधिक निकट होती है। इसी से विदेशी विचारकों ने तो कविता को बोलता हुआ चित्र और चित्र को मौन काव्य तक कह दिया है। अतः स्पष्ट है कि कविता बिम्बों में बोलती है। सृजन के क्षणों में भावनाएँ और विचार शब्द बिम्बों में बँधते चले जाते हैं और मर्मस्पर्शी अथवा बुद्धि को अनायास ही झकझोर देने वाली कविता का सृजन होता जाता है। स्वयं जीवन में बिम्ब विधान अथवा कल्पना का बड़ा महत्व है। इसी से काव्य बिम्बों को केवल शब्दों के माध्यम से रूप खड़ा करने वाला नहीं माना जाकर, उनको पाठक के विचार और मनोवेगों को उद्वेलित करने वाली कलापूर्ण क्रिया के रूप में स्वीकार किया गया है। जो बिम्ब केवल रूप ही खड़ा करने वाले होते हैं तथा पाठक में किसी भाव या विचार को उदबुद्ध करने में असमर्थ होते हैं अथवा यों कहें कि जो पाठक को किसी भाव या विचार की तह तक नहीं पहुँचा पाते, आलोचक ऐसे बिम्बों को सफल काव्य बिम्ब नहीं मानते। इसलिए यह स्वीकार किया जा सकता है कि सर्जना के क्षणों में अनुभूति के ये नाना रूप कवि की कल्पना पर आरूढ़ होकर जब शब्द अर्थ के माध्यम से व्यक्त होने का उपक्रम करते हैं तो इस सक्रियता के फलस्वरूप मानस छवियाँ आकार धारण करने लगती हैं। आलोचना की शब्दावली में इन्हें ही काव्य बिम्ब कहते हैं।

बिम्ब के प्रकार

दृश्य चित्रण, वस्तु चित्रण, भाव व्यंजना तथा अलंकृति के आधार पर इनके निम्नलिखित भेद किए जा सकते हैं :

1 दृश्य बिम्ब, 2 वस्तु बिम्ब, 3 मान बिम्ब तथा 4 अलंकृत बिम्ब। इसके अतिरिक्त अभिव्यक्ति का गठन एवं अत्यधिक विस्तारपूर्ण चित्रण के आधार पर दो प्रकार के बिम्ब और स्वीकार किए गए हैं, 1 सान्द्र बिम्ब और 2 विवृत बिम्ब।

इस प्रकार अब हमारे सामने बिम्बों के निम्नलिखित छः प्रकार आ जाते हैं : 1 दृश्य बिम्ब, 2 वस्तु बिम्ब, 3 भाव बिम्ब, 4 अलंकृत बिम्ब, 5 सांद्र बिम्ब, 6 विवृत बिम्ब।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

दृश्य बिम्ब रमणीय दृश्य विधान के द्वारा नेत्रों को तो सुख देते ही हैं, इसके साथ ही अपने संश्लिष्ट चित्रण के कारण इस प्रकार के बिम्ब गंध, ध्वनि एव स्पर्श की कियाओं का भी ऐसा रूप विधान करते हैं कि इनसे हमारे प्रायः सभी ऐन्द्रिय बोध तृप्ति प्राप्त कर लेते हैं। क्रिया-व्यापार के दृष्टिकोण से इसको दो भागों में विभाजित किया जा सकता है यथा 1 स्थिर दृश्य बिम्ब एंव 2 गत्यात्मक दृश्य बिम्ब। वस्तु बिम्बों में विषय वस्तु का सुगठित चित्रण देखने को मिलता है। इस प्रकार के बिम्बों की भी दृश्य बिम्बों के समान ही दो श्रेणियों स्वीकार की जा सकती हैं यथा 1 स्थिर दृश्य बिम्ब एंव 2 गत्यात्मक दृश्य बिम्ब। भाव बिम्ब पूर्ण बिम्बों का सृजन नहीं करते। इस विधा में कुछ खंडित चित्र इस तीव्रता के साथ रूपायित होते हैं कि उनको पढ़ते ही अनेकशः भाव-विचार मानस-मस्तिष्क को आन्दोलित कर जाते हैं। अलंकृत बिम्ब रूप सज्जा एवं अलंकर विधान करने के लिए प्रयुक्त होते हैं। सान्द्र और विवृत बिम्बों में अनुभूति से अधिक अभिव्यक्ति कौशल पर बल दिया जाता है।

यहाँ यह भली प्रकार समझ लेना चाहिए कि बिम्बों का उपर्युक्त विभाजन केवल विषय को समझने के दृष्टिकोण से ही है, अन्तिम और आत्यंतिक नहीं है। प्रसाद के स्कंदगुप्त में मातृगुप्त के माध्यम से कविता की परिभाषा आती है। कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है। अंधकार का आलोक से असत् का सत् से जड़ का चेतन से, और जगत का अंतर्जगत से सम्बंध कौन कराती है ? कविता की इस परिभाषा से कपितय तथ्य निकलते हैं, यथा कविता भावपूर्ण तथा संगीतात्मक होती है, उसमें अंधकार और आलोक, असत् और सत् जड़ और चेतन तथा जगत और अन्तर्जगत् का चिन्तन सुगुम्फित होता है यानी उसमें प्रौढ़ विचार अन्तर्निहित होते हैं एवं वह वर्णमय चित्र हैं अर्थात अपनी अभिव्यक्ति में बिम्बात्मक। ऊपर कविता में नियोजित भाव एवं विचार तथा बिम्बों पर यत्किचित प्रकाश डाला जा चुका है। बिम्ब विधान की चर्चा से हटकर यहाँ कविता में भाव एव विचार संयोजन की चर्चा की जा सकती है।

समग्र मानसी सृष्टि और समग्र स्थूल सृष्टि कविता का विषय है। प्रसाद के उपर्युक्त शब्द-युग्म अंधकार और आलोक, असत् और सत, जड़ और चेतन, अन्तर्जगत और बहिर्जगत कविता के विस्तीर्ण फलक की ओर ही इंगित करते हैं। यानी कवि का सारा पारावार ही अपना है, पराया कुछ भी नहीं है। इसीलिए उपेक्षित भी कुछ भी नहीं है। यही कारण है कि कविता को समाज की समालोचना के अर्थ में स्वीकार किया गया है। समस्या यह है कि समग्र मानसी एवं स्थूल सृष्टि की व्याप्ति को कवि कैसे काव्य में अभिव्यक्त करे ? यह समस्या और भी दुरूह तब हो उठती है, जब कविता को वर्णन और विवरण के धरातल से उठाकर सांकेतिक अभिव्यंजना के स्तर पर पहुँचा दिया जाता है। इसके अतिरिक्त समस्या वहाँ भी आ खड़ी होती है जहाँ कवि सूक्ष्मतम अनूभूतियों को वाणी देने का प्रयत्न करता है। इसके साथ ही समस्या वहाँ भी उत्पन्न हो जाती है, जहाँ चिन्तन की दीर्घ परम्परा को कभी तो घिसे-पिटे परम्पराबद्ध शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त करना होता है और कभी नयी काव्य-भाषा के शब्दों में। तब कवि इन सभी समस्याओं का एक ही हल अपनाता है और वह रोता है प्रतीकों के प्रयोग का यानी काव्य में प्रतीक 1 सांकेतिक अभिव्यंजना के

लिए, 2 अदृश्य अश्रव्य, अप्रस्तुत का मूर्त विधान करने के लिए तथा 3 अपने तीव्र भाव एवं विचारधारा के अनुरूप शब्दों को नये अर्थ देने के लिए प्रयुक्त होते हैं।इन प्रतीकों के विभिन्न स्रोत स्वीकार किए गए हैं। यथा संस्कृति, प्रकृति एवं सिद्धान्त। इन तीनों स्रोतों के आधार पर 1 सांस्कृतिक प्रतीक 2 प्रतीक तथा 3 सैद्धान्तिक प्रतीक।

प्रतीकों के तीन वर्ग बना दिए गए हैं। स्पष्टता के लिए इन तीनों वर्गों का फिर से उप वर्गीकरण किया गया है। सांस्कृतिक प्रतीकों के अन्तर्गत पौराणिक, ऐतिहासिक तथा धार्मिक प्रतीकों को लिया गाया है। प्रकृत प्रतीकों के अन्तर्गत जड़ और चेतन की संज्ञा से दो वर्ग बना दिए गए हैं तथा सैद्धान्तिक प्रतीकों के वैज्ञानिक, दार्शनिक तथा राजनीतिक खंड कर दिए गए हैं। इस प्रकार वर्ग और उपवर्गों को मिलाकर प्रतीकों के निम्नलिखित प्रकार सुसंगठित किए गए हैं :

1 पौराणिक प्रतीक, 2 ऐतिहासिक प्रतीक, 3 धार्मिक प्रतीक, 4 जड़ प्रतीक, 5 चेतन प्रतीक, 6 वैज्ञानिक प्रतीक, 7 दार्शनिक प्रतीक, 8 राजनीतिक प्रतीक।

लौकिक मुहावरे और लोकोक्तियाँ भी प्रतीकात्मक होती हैं, लेकिन डॉ. कैलाश वाजपेयी के उपर्युक्त वर्गीकरण में उन्हें कहीं पर भी नहीं रखा जा सकता। इसलिए सुविधा के दृष्टिकोण से प्रतीकों का एक वर्ग और बनाया जा सकता है जिसको लौकिक प्रतीक की संज्ञा दी जा सकती है। निराला के बिम्ब-विधान और प्रतीक योजना को उपर्युक्त सैद्धान्तिक फलक पर समझा जा सकता है।

निराला का बिम्ब विधान : दृश्य बिम्ब

निराला के काव्य में दृश्य बिम्बों की भरमार है। ये दृश्य बिम्ब अत्यन्त ही संश्लिष्ट रूप में चित्रित हुए हैं। ये दृश्य बिम्ब अपनी सम्पूर्णता के कारण नेत्रों को तो सुख देते ही हैं, साथ ही इनमें गंध, ध्वनि, स्पर्श इत्यादि की जो सुखद योजना हुई है उससे हमारी अन्य इन्द्रियों को भी सुख का बोध होता है। यहाँ तक कि वर्ण-विधान तक निराला जी की सूक्ष्म दृष्टि से नहीं छिप सका है।

सर्वप्रथम अधजगी यामिनी का यह चित्र दृष्टव्य है :

खुले केश अशेष शोभा भर रहे
पृष्ठग्रीवा बाहु उर पर तर रहे
बादलों में घिर ऊपर दिनकर रहे
ज्योति की तन्वी तड़ित
द्युति ने क्षमा माँगी

जगी हुई यामिनी का यह स्थिर दृश्य बिम्ब है। लेकिन यही जब गतिवान होती है तब :

हेर उर पट, फेर मुख के बाल
लख चतुर्दिक चली मंद मराल
गेह में प्रिय स्नेह की जयमाल...

वक्ष पर पड़े वस्त्र को देखना, फिर एक झटके से मुख पर से केशों को अलग करना तथा चारों ओर विस्फारित नयनों से देखकर हंस सी चाल से मंद-मंद गमन करना... मानवीकृत रूप में प्रकृति का कितना प्रभावात्मक गति चित्र है।

निराला की कवि दृष्टि इतनी प्रखर, चेतना इतनी ग्रहणशील तथा लेखनी इतनी कुशल है कि अनायास ही चित्र चंद शब्दों के प्रयोग से भी सर्वांगपूर्ण बन जाता है। सांझ के शांत वातावरण को नमित मुख सांध्य कमल कहकर यहाँ कैसे जादू भरे ढंग से बाँध दिया गया है यथा :

प्रशमित है वातावरण नमित मुख सांध्य कमल
(राम की शक्ति पूजा)

अपरा और वनबेला के इस मस्त गत्यात्मक चित्र के लिए क्या कहा जाए ?

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

झुक-झुक तन तन फिर
झूम-झूम हँस-हँस झकोर
चिर परिचित चितवन डाल
सहज मुखड़ा मरोर
भर मुहुर्मुह तन गंध विकल
बेली बेला बन बेला (अनामिका)

गति के साथ ही यहाँ गंध की विकल कर देने वाली झकोर भी है। गंध की ऐसी ही अनुभूति गीतिका की इन पंक्तियों में भी होती हैं :

किसकी यह शोभा छीन

इसी प्रकार 'तुलसीदास' में तुलसीदास का यह शब्द चित्र भी स्थिर वस्तु-बिम्ब ही स्वीकार किया जाएगा:

जो तुलसीदास, वही ब्राण कुल दीपक
आयत-दृग, पुष्ट देह, गत-भय
अपने प्रकाश में निःसंशय
प्रतिमा का मंद-स्मित-परिचय : संस्मारक (तुलसीदास)

निष्कर्ष

जैसे खंड बिम्बों के द्वारा युग की मनःस्थिति के चित्र अंकित किए गए हैं। पहले बिम्ब के माध्यम से वासंतिक काल की ओर संकेत किया गया है, जबकि दूसरे बिम्ब के माध्यम से उस युग की गमगीन मनःस्थिति की ओर इंगित किया गया है, जिसमें मुसलमानों के अत्याचारों से भारत की आत्मा कुचली जा रही थी। इस दृष्टिकोण से निराला का सम्पूर्ण 'तुलसीदास' खंडकाव्य दृष्टव्य है। उसमें कहीं प्रकृति के माध्यम से अनायास ही भारत की पराभूत आत्मा रूपायित हो गयी है, तो कहीं मुगलों के विलास भावों का तथा उनसे प्रभावित उस युग की जनता की मानसिक भावनाओं को रूपाकृति मिली है। तुलसी की मानसिक ऊहापोह के एक-से-एक रमणीय हृदयद्रावक चित्र भी खंड चित्रों के माध्यम से उसमें रूपायित किए गए हैं। मानसिक हलचलों को अंकित करने से ही ये बिम्ब भाव-बिम्बों की संज्ञा से अभिहित हुए हैं। इस दृष्टिकोण से 'जुही की कली', 'शेफालिक', 'जागो फिर एक बार' तथा 'गीतिका' के गीत दृष्टव्य हैं।

अन्त में यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि निराला ने अत्यन्त ही सूक्ष्मता से बिम्बों की शक्ति और प्रकृति को आत्मसात किया है तथा इनके मणिकांचन योग से अपने काव्य को कला तथा दीप्ति तथा चेतना की प्रखरता से चिरन्तन बना दिया है। एक समय था जब छन्द काव्य का अनिवार्य अंग माना जाता था, किन्तु आधुनिक काल में छन्द का महत्व अस्वीकार कर दिया गया है। निराला तो यहाँ तक कहते हैं कि काव्य का वास्तविक विकास छन्दों के बन्धन से मुक्त होकर होता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 *सुमित्रानंदन पंत कनक प्रभात*
2 *सुमित्रानंदन पंत पृष्ठ 53*
3 *निराला, परिमल*
4 *निराला, परिमल*
5 *निराला, वनबेला*
6 *निराला, सन्ध्या सुन्दरी*
7 *निराला, भिक्षुक*
8 *निराला, राम की शक्ति पूजा*
9 *निराला, सरोज स्मृति*
10 *निराला, सरोज स्मृति*
11 *निराला, तुलसीदास*